सभी वर्गों-संगठनों सम्प्रदायों के भावनाशीलों-विचारशीलों से

एक निवेदन - एक अनुरोध

यह वसंत पर्व विशिष्ट है, दिव्य चेतना के संचार का लाभ उठाएँ

वसंत का महत्त्व

वसंत ऋतु में प्रकृति में एक नयी चेतना का संचार होता है। वनस्पतियों में एक अदृश्य दिव्य प्रवाह उभरता है, जिसके कारण जिसके प्रभाव से पुराने पत्ते झड़ने और नई कोपलें फूटने लगती हैं। प्रकृति की सोई हुई नवसृजन शक्ति मानो जागकर अंगडाई लेकर सक्रिय हो उठती है। वसंत पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी) से होली (फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा) के ४० दिनों को वंसत का गर्भकाल कहा जाता है। इसी अवधि में सूक्ष्म प्रकृति की वासंती तरंग पककर स्थूल प्रकृति में अनेक रूपों में व्यक्त होने लगती है। गीता के विभूतिपाद में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं को ऋतुओं में वसंत ऋतु **(ऋतुनां कुसुमाकरः)** कहा है।

जीवन की सृजनशील उमंगों को भी वासंती उमंगें कहा जाता है। वसंत पंचमी को माता सरस्वती का अवतरण दिवस मानकर उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। सरस्वती सद्ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है। सद्ज्ञान ही पककर सत्संकल्प बन कर पुष्पित और सत्कर्म के रूप में फलित होता है। युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को हिमालय स्थित उनकी मार्गदर्शक सत्ता का प्रथम साक्षात्कार वसंत पर्व पर ही हुआ तथा हर वसंत पर्व पर युग परिवर्तन में समर्थ शक्ति का नया संचार प्राप्त होता रहा। इसके बल पर वे एक जीवन में पाँच समर्थ जीवनों जितना चमत्कारी पुरुषार्थ कर सके। इसीलिए वे अपना जन्मदिन वसंत पंचमी को ही मानते रहे।

यह विशिष्ट वसंत

यह वसंत पर्व (८ फरवरी २०११) अति विशिष्ट है। तत्त्ववेत्ताओं के अनुसार वसंत पर्व २०११ नवयुग सृजन का प्रखर चेतना प्रवाह लेकर आ रहा है।

➲ विश्व प्रसिद्ध तेजस्वी स्वामी विवेकानंद ने नये युग के संदर्भ में कहा है कि '*ठाकुर के जन्म के साथ ही नवयुग की दैवी योजना का सूत्रपात हो गया है।*' विश्वमान्य योगी श्री अरविन्द ने कहा है कि युग संधिकाल की अवधि १७५ वर्ष होती है। ठाकुर रामकृष्ण परमहंस का जन्म फरवरी सन् १८३६ में हुआ था। १८३६+१७५ =२०११ ईसवी। उक्त दोनों महापुरुषों के कथन का निष्कर्ष यही निकलता है कि फरवरी २०११ से संधिकाल पूरा होकर कालचक्र नवसृजन के सक्रिय खण्ड में प्रवेश करेगा। युगऋषि का जन्मशताब्दी वर्ष भी यही है।

➲ माया काल सारिणी (मायान्स कलैण्डर) के अनुसार २०१२ से काल सारिणी खाली है। कुछ लोग इसका अनगढ़ अर्थ यह लगाते हैं कि इसके बाद यह संसार समाप्त हो जायेगा। किन्तु उक्त विषय में मर्मज्ञों का मानना है कि आगे के भविष्य का निर्धारण

ईश्वरीय अदृश्य प्रवाह तथा मनुष्यों के दृश्य पुरुषार्थ के संयोग से होगा।

➲ युगऋषि ने इसीलिए २१वीं सदी उज्ज्वल भविष्य का नारा दिया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा-लिखा है कि *''मनुष्य और मनुष्यता का भाग्य नयी कलम-नयी स्याही से लिखा जाना है।''* उनके अवतरण का मुख्य उद्देश्य नवयुग सृजन की ईश्वरीय योजना को प्रत्यक्ष में लागू करना रहा है। वाङ्मय 'सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण भाग-२' में वे लिखते हैं-

''हमने अपना जीवन नवयुग की पूर्व सूचना देने, महाकाल के इस महान प्रयोजन में सम्मिलित होने के लिए प्रबुद्ध आत्माओं को निमंत्रण देने में लगा दिया। जिस काम के लिए हम आये थे, वह अब पूरा होने वाला है।''

खुला निमंत्रण

युगऋषि के उक्त कथन में किसी व्यक्ति, वर्ग या संगठन विशेष का उल्लेख नहीं है। खुला निमंत्रण प्रबुद्ध आत्माओं के लिए है। युग निर्माण जैसे व्यापक अभियान में विश्व के सभी क्षेत्रों, सभी वर्गों, संगठनों, सम्प्रदायों में अवतरित प्रबुद्ध आत्माओं को अपने-अपने ढंग से सक्रिय होना होगा। ऊपर संदर्भित वांङ्मय में ही वे स्पष्ट करते हैं।

''इस संध्याकाल (युगसंधि काल) में सभी उच्च आत्माएँ महाकाल का पुण्य प्रयोजन पूरा करने के लिए उसी तरह विद्यमान हैं, जिस प्रकार सभी ऋषि-मुनि-वनवासी अपने निकटवर्ती जलाशय पर संध्या वंदन करने के लिए एकत्रित हो जाते हैं। अभी वे साधारण स्थिति में हैं, पर अगले दिनों में उन्हें असाधारण बनते देर नहीं लगेगी। लोग आश्चर्य करेंगे कि कल का साधारण समझा जाने वाला व्यक्ति आज इतना असाधारण, इतना महान् कैसे बन गया? यह तो सब महाकाल का, युग निर्माण प्रत्यावर्तन महारास का दिव्य दर्शन जैसी ही अद्भुत घटना होगी।''

साधारण को असाधारण बनाने वाली यह चमत्कारी अथवा परम सौभाग्य देने वाली प्रक्रिया का लाभ वे ही उठा पायेंगे, जो इस विशेष समय में अपने व्यक्तित्व की विशिष्टता का प्रमाण प्रस्तुत कर सकेंगे। इस संदर्भ में युगऋषि लिखते हैं-

''साधारण समय और विशेष समय में, साधारण व्यक्ति और विशेष व्यक्ति में एक खास अन्तर होता है। साधारण की चाल धीमी होती है और विशिष्ट को तत्काल निर्माण करने से लेकर तत्काल कदम उठाने तक की प्रक्रिया सम्पन्न करनी होती है।''

विशिष्ट या प्रबुद्ध आत्मा उन्हें ही माना जाता है, जो ऐसे विशेष समय में परमात्मा के संकतों को समय पर समझने और क्रियान्वित करने की समझदारी और साहसिकता दिखा पाते हैं। जो व्यक्ति परमात्मा के संकेतों को समझ कर प्राप्त अवसर का सही उपयोग कर लेते हैं, वे श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी बनते हैं और जो चूक जाते हैं, उन्हें अवसाद-पश्चात्ताप को झेलना पड़ता है। युगऋषि का कथन है-

''जाग्रत् आत्माओं को युग निमंत्रण यही है, इन दिनों अनन्त अंतरिक्ष में गूँजने वाले पांचजन्य की प्रतिध्वनि को जो सुन सकें-सुनें, जो उसका अनुसरण कर सकें-करें। श्रेय-सौभाग्य और अवसाद-पश्चात्ताप में से एक को चुनने के लिए हममें से हर कोई पूर्ण स्वतंत्र है। इस

स्वतंत्रता का उपयोग इन्हीं दिनों करना होगा।''

महाकाल का, युगऋषि का खुला निमंत्रण सभी के लिए है। जिनकी अन्तःचेतना इस सुअवसर के सदुपयोग के लिए सहमति दे, वे सांसारिक पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर इसके लिए उछल कर आगे आयें। छोटी-सी ही सही, लेकिन सही दिशा में सुनिश्चित शुरूआत करने की सदाशयता दिखायें। इस विशिष्ट वसंत पर्व के दिव्य चेतना संचार को यथाशक्ति धारण करने का प्रयास करें।

सुनिश्चित दिशाधारा

युगऋषि द्वारा स्थापित संगठन ''युग निर्माण परिवार-गायत्री परिवार'' से जुड़े सभी नैष्ठिक परिजन इस विशिष्ट वासंती प्रवाह को धाराबद्ध (चैनलाइज़) करने का प्रयास कर रहे हैं, किन्तु प्रकट होने वाला दिव्य चेतन प्रवाह तो किसी भी व्यक्ति, वर्ग, संगठन की सीमा से परे सभी के लिए है। इसलिए सभी से विनम्र निवेदन एवं भावभरा अनुरोध है कि वे भी इसका समुचित लाभ उठाएँ। दिशाधारा इस प्रकार है-

➲ इस वर्ष वसंत पंचमी ८ फरवरी को है। युग निर्माण परिवार इसके लिए प्रयत्नशील है कि अधिक से अधिक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस ईश्वरीय योजना में भागीदार बनकर अनुपम श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी बनें। इसके दो प्रारूप हो सकते हैं-

१. जो व्यक्ति या वर्ग विशेष के नर-नारी युग निर्माण परिवार के निर्धारित कार्यक्रमों में से किन्हीं में भाग लेना चाहें, वे बिना किसी संकोच के प्रसन्नतापूर्वक ऐसा कर सकते हैं।

२. जो स्वतंत्र रूप से अपने ढंग से दिव्य प्रवाह से जुड़ने के लिए रूपरेखा बनाएँ, वे इसके लिए स्वतंत्र हैं। युग निर्माण परिवार इसके लिए उनको यथासाध्य सहयोग प्रदान करेगा।

क- युग निर्माण परिवार की छोटी-बड़ी इकाइयाँ इसके लिए तीन दिन विभिन्न गतिविधियाँ चलायेंगी। दिनांक ६ फरवरी को प्रभात फेरियों, शोभायात्राओं के माध्यम से नवयुग सृजन के सूत्रों की ओर जन-जन का ध्यान आकर्षित किया जायेगा, सक्रिय भागीदारी के लिए जन-जन को प्रेरित-उत्साहित किया जायेगा।

दिनांक ७ को सबेरे ६ बजे से ८ तारीख को सबेरे तक '*सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य*' की भावना के साथ अखण्ड जप चलाया जायेगा। भागीदार नर-नारी अपनी सुविधा से किसी भी उपयुक्त समय पर उसमें शामिल हो सकते हैं। उक्त भावना के साथ गायत्री महामंत्र अथवा अपने किसी इष्टमंत्र या इष्ट नाम का जप करने की स्वतंत्रता रहेगी।

दिनांक ७ को ही शाम को सूर्यास्त के बाद हर घर, हर सार्वजनिक स्थल, देवालय आदि में **'नवयुग दीपोत्सव'** सम्पन्न किया जायेगा। घरों में परिवार के सदस्य मिलकर कम से कम ५ (श्रद्धा या उत्साह के अनुरूप अधिक) दीपक पूजा स्थल पर रखें। पन्द्रह मिनट एक साथ इष्ट गायत्री मंत्र या अन्य इष्ट मंत्र, इष्ट नाम का मौन जप करें। फिर यह प्रार्थना दुहराएँ-

''हे परम पिता परमात्मा! मनुष्य मात्र के लिए उज्ज्वल भविष्य अवतरित करने वाली आपकी मंगलमयी युग निर्माण योजना में हम भागीदार बनना चाहते हैं। हमें इसके लिए उपयुक्त मनोवृत्ति एवं शक्ति प्रदान करें। अवांछनीयता का अंधकार दूर

करने के लिए हम भी एक ज्योतित दीपक की तरह सत्प्रवृत्तियों का प्रकाश फैला सकें। हम संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय-प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।''

इसके बाद सामूहिक सस्वर मंत्रोच्चार के साथ दीपकों को प्रज्वलित करें तथा उन्हें द्वार, छत, आंगन आदि में श्रद्धापूर्वक स्थापित करें।

दिनांक ८ को संगठन की विभिन्न इकाइयों में-युगऋषि को अपने संकल्पों की श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ जीवन को यज्ञमय-परमार्थमय बनाने के भाव से सामूहिक यज्ञ आयोजित होंगे। कोई भी श्रद्धालु इसमें अनुशासन के साथ भाग ले सकेंगे।

ख- स्वतंत्र रूप से जो व्यक्ति या संगठन इस पर्व की ऊर्जा का लाभ अपने ढंग से उठाना चाहें, वे उक्त दिशाधारा के अनुरूप अपने कार्यक्रमों का निर्धारण और संचालन कर सकते हैं। इसके लिए पहले से रूपरेखा बना लें। जैसे-

➲हमें-हमारे संगठन को पहले चरण में समाज को उज्ज्वल भविष्य के लिए किन व्यसनों, कुरीतियों, रूढ़ियों को दूर करना है। नवयुग के अनुरूप श्रेष्ठ मानव बनाने वाली किन सत्प्रवृत्तियों को प्रारंभ करना है, यह तय कर लें। उन्हीं निर्धारणों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने की शक्ति पाने के लिए सामूहिक जप-प्रार्थना, **'नवयुग दीपोत्सव'** आदि की व्यवस्था बनाई जाय।

➲ जो कुछ भी किया, उसके लिए सीमित ही सही किन्तु ठोस प्रयास किए जायें। इस संदर्भ में युगऋषि का स्पष्ट निर्देश है।

''इस संदर्भ में किसी को भी परिस्थितियों, विषमता या अनुकूलता का बहाना नहीं गढ़ना चाहिए। (समय की विशिष्टता को देखते हुए अनुकूल समय की प्रतीक्षा नहीं की जा सकती इसलिए) जो आज की परिस्थितियों में संभव है, बात उतनी ही सोचनी और करनी चाहिए-त्याग बलिदान की पुण्य परम्परा जाग्रत् आत्माओं को अपने ही जीवन क्रम से आरंभ करनी होगी। दूसरों से याचना करने के पहले यही न्यायानुकूल है कि पहले अपनी ही पोटली खाली की जाय, भले ही वह सुदामा के बगल में दबे हुए थोड़े से चावल ही क्यों न हों?''

बात समझदारी और सत्साहस के आधार पर तन कर खड़े होने भर की है। जो ऐसा करेंगे, वे महाकाल की योजना के वरणी बनने का सौभाग्य अर्जित कर सकेंगे। इस संदर्भ में युगऋषि का आश्वासन इस प्रकार है-

''अगला काम महाकाल स्वयं करेंगे। अगले दिनों उनकी प्रेरणा से एक से एक बढ़कर प्रतिभाशाली और प्रबुद्ध आत्माएँ सामने आयेंगी। ये विश्व स्तर पर एक ऐसा व्यापक संघर्ष प्रस्तुत करेंगी, जो असमानता के सारे कारणों को तोड़-मरोड़ कर फेंक दें और समता की मंगलमयी परिस्थितियों का शुभारंभ करके इसी धरती पर स्वर्ग का अवतरण संभव कर दिखाएँ।''

इस पत्रक को हर क्षेत्र में अपनी आवश्यकता के अनुसार छपवा कर इसके सहारे जन संपर्क द्वारा 'नवयुग दीपोत्सव' में भागीदारों की संख्या बढ़ाई जा सकती है।